IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

स्त्री जीवन और चंद्रकिरण सौनरेक्सा के उपन्यास

डॉ0 संदीप वर्मा
राजकीय डिग्री कालेज रानीगंज,
प्रतापगढ़।

उपन्यास को मानव जीवन के गद्यात्मक महाकाव्य की संज्ञा दी जाती है। वर्तमान आधुनिकतावादी समाज में मानव मूल्यों में आए विविध परिवर्तनों को अपनी समग्रता में उपन्यासों में ही व्यक्त किया जा सकता है। उसमें पात्रों की अधिकता, विविधता एवं व्यापकता के कारण मानव जीवन का सच्चा चित्र अंकित होता है। प्रत्येक कथाकार भी मानव जीवन के अनगिनत रूपों को विभिन्न घटनाओं एवं चरित्र–चित्रण की सहायता से पाठकों के सम्मुख इस प्रकार प्रस्तुत करता है कि उसमें कथा को प्रस्तुत करने का उद्देश्य ही नहीं अपितु माननीय व्यक्तित्व के निर्माण और उसमें आने वाले व्यावहारिक परिवर्तनों की भी झलक दिखाई पड़ जाती है। डॉक्टर प्रेम भटनागर के शब्दों में हम कह सकते हैं कि उपन्यास का उपजीव्य वे मानव हैं जो अपनी भावनाओं, कामनाओं और विभिन्न भंगिमाओं का एवं मान्यताओं के साथ चित्रित होकर उपन्यास शिल्प को गति देता है।''1 प्रेमचंदपूर्व युग में नारी जीवन हिंदी कथा साहित्य के लिए लगभग अछूता ही रहा है। कुछ महिला कथाकारों और महिला पात्रों का नाम जरूर लिया जा सकते हैं किंतु उनके साहित्य को साहित्य की मुख्यधारा में कभी शामिल नहीं किया गया। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि दलितों की तरह स्त्रियों को भी साहित्य की चौखट से लगभग दूर ही रखा गया।किंतु आधुनिक साहित्य में वैक्तिकता को महत्त्व मिलने के कारण और आधुनिक ज्ञान–विज्ञान के प्रसार के प्रभावस्वरूप साहित्य में उपेक्षित वर्गों को भी प्रतिनिधित्व मिलने लगा। साथ ही उनकी भी आवाज असरदार और ठोस रूप में विभिन्न विधाओं के माध्यम से व्यक्त होने लगी। उन विधाओं में उपन्यास एवं कहानी की अपनी अलग ही महत्ता है।आधुनिक काल में अनेक समाज सुधार के कार्यक्रम एवं सामाजिक आंदोलनों और नारी शिक्षा के बढ़ते प्रभाव के कारण नारियों की स्थिति में भी परिवर्तन आना आरंभ हो गया और उसका चित्रण साहित्य में भी पहले की अपेक्षा अधिक सशक्त रूप में होने लगा।

प्रेमचंद के उपन्यासों–सेवा सदन, निर्मला, गबन, गोदान आदि में अनगिनत नारी समस्याओं और उनके व्यक्तित्व का चित्रण मिलता है। डॉक्टर मोहम्मद अजहर ढेरी वाला का मानना है कि–प्रेमचंद के नारी पात्रों में संघर्ष है, जिजीविषा है, रूढ़ियों और अंधविश्वासों से टकराने का साहस है।2।

प्रेमचंदोत्तर युग में साहित्य में शामिल होने वाली विविध नवीन विचारधाराओं जैसे माकसंवाद, मनोविश्लेषणवाद आदि के कारण साहित्य पर व्यापक असर पड़ने लगा। इन्हीं विचारों के प्रभाव स्वरूप समाज में शोषित वर्गों की आवाजें पहले की अपेक्षा अधिक ठोस और प्रामाणिक ढंग से व्यस्त होने लगी, जिसमें पिछड़े, दलित, आदिवासी और स्त्री आदि अनेक वर्गों की भावनाओं का यथार्थ अंकन साहित्य में आने लगा। साहित्य में उनका चित्रण ही नहीं हुआ अपितु समय के साथ वे साहित्य के केंद्र में आ गए। समाज का दृष्टिकोण भी उनके प्रति पहले की अपक्षा तार्किक, नैतिकतापूर्ण और उदार बनने लगा। वर्तमान समय में अनेक महिला साहित्यकार साहित्य की विभिन्न विधाओं में अपनी भावनाओं का यथार्थ एवं प्रामाणिक अंकन कर रही हैं और उनको व्यापक स्वीकृति और महत्ता भी मिल रही है। इन महिला कथाकारों में अनेक चोटी की साहित्यकार रही हैं। इन्हीं में से एक महत्वपूर्ण नाम चंद्रकिरण सौनरेक्साजी का भी है जो बीसवीं सदी की एक प्रतिभासंपन्न कथाकार रही हैं। जिन्हें शरतचंद्र और प्रेमचंद की परंपरा का कथाकार भी कहा जाता है। चंद्रकिरण जी ने अपने विभिन्न उपन्यासों के माध्यम से निम्नवर्गीय, मध्यवर्गीय और उच्चवर्गीय नारी जीवन का यथार्थ अंकन किया है। जिसमें विभिन्न क्षेत्र की नारियों की विविध समस्याओं, संघर्षो एवं शोषण का प्रामाणिक चित्रण किया गया है। इसके साथ ही उन्होंने नारी जीवन की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों का आधार भो प्रस्तुत किया है, जिनमें उन्हें अनेक समस्याओं के बीच जीवन में आगे बढ़ना पड़ता है।उनकी महत्वपूर्ण रचनाओं में–और दिया जलता रहा, कहीं से कहीं नहीं, चंदन चाँदनी, वंचिता का नामलिया जा सकता है। भारतीय समाज में एक स्त्री एक साथ विभिन्न सामाजिक भूमिकाओं का निर्वाह एक साथ करती है। उनके सभी उपन्यासों में अनेक ऐसे सशक्त स्त्री पात्र हैं जो माँ के रूप में एक आदर्श और वात्सल्यमयी माँ क रूप में सामने प्रस्तुत होती हैं और दिया जलता रहा उपन्यास को उमा देवी एक ऐसी ही माँ के रूप में सामने प्रस्तुत होती हैं। वह इस उपन्यास की मुख्य पात्र दीपा की माँ हैं। जब उसकी पुत्री दीपा की उम्र केवल 8 वर्ष थी तभी उनके पति की हत्या एक दंगे में हो गई थी। वह विधवा जीवन व्यतीत करने के लिए अभिशप्त थीं। आश्रय के लिए वह अपनी बेटी को लेकर अपने देवर के पास आती हैं। उमा देवी प्राचीन विचारों की एक धर्म परायण महिला थीं, बाहर की दुनिया से वह बिल्कुल अनजान थी वह अपने पति की अंतिम इच्छा–जो

लड़की को खूब पढ़ाने को थी–उसे पूरा करना चाहती हैं। उधर लड़की के चाचा लड़की को कालेज नहीं भेजना चाहते हैं, लेकिन उमा देवी अपनी बेटी को पढ़ाना चाहती हैं और उसकी मेहनत को देखकर अपनी बेटी को यह आश्वासन भी देती है कि– अभी मेरे पास दो–चार सोने के गहने हैं, उनसे तेरी कुछ साल की फीस, किताबों का जुगाड़ हो ही जाएगा, आगे भगवान मालिक हैं।3 इस प्रकार उमा देवी अपने जीवन की अमूल्य धरोहर को बेचकर भी अपनी लड़की को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने वाली एक ममतामयी माँ के रूप में प्रस्तुत होती हैं। चंद्रकिरण जी ने यहाँ उमा देवी के माध्यम से विधवा स्त्री के दुख और जीवन संघर्ष को यथार्थ रूप में अंकित किया है। उन पर अनेक अत्याचार और शोषण होने के बाद भी वह अपनी बेटी की पढ़ाई में कोई बाधा नहीं होने देती हैं। हद तो तब हो जाती है जब उनके देवर ने उनके साथ शारीरिक संबंध स्थापित कर उन्हें गर्भपात के लिए मजबूर करता है। वह इस अमानवीय कृत्य को भी केवल इसलिए सह जाती हैं कि उनकी पुत्री की पढ़ाई में कोई बाधा न उत्पन्न हो और दिया जलता रहाश्उपन्यास के माध्यम से रतन की माँ, वंशी की माँ और विक्रम की माँ के रूप में चंद्रकिरण जी ने हमारे समाज के उच्च वर्ग, निम्न वर्ग और मध्य वर्ग के परिवार में माँ की अलग–अलग भूमिकाओं का यथार्थ चित्रण किया है जो अपने–अपने वर्ग की संकीर्णताओं और रूढियों में बँधी होने के बाद भी अपनी सामाजिक दायित्वों का निर्वाह करती हैं। रतन की माँ एक मध्यवर्गीय परिवार की महिला हैं। उनके पति एक रबर कंपनी में स्टोरकीपर की साधारण सी नौकरी करते हैं। उधर एक साधारण भारतीय स्त्री की तरह रतन की माँ भी तमाम खींचतान के बोच अपने परिवार को आगे बढ़ाती हैं। साथ ही वह अपने बेटे के सुखद भविष्य के लिए दिन–रात सपने देखती हैं। यही नहीं घर की विपरीत अवस्था हो जाने के कारण अपनी तीनों लड़कियों– शीला, लीला और कला को स्कूल जाना बंद करवा देती हैं ताकि उनका लड़का अच्छी शिक्षा प्राप्त कर अच्छी नौकरी प्राप्त करे। उधर बंसी की माँ एक निम्नवर्ग की स्त्री है जो अपनी झोपड़ी में अपने बच्चों क साथ अपना जीवन निर्वाह करती है और अपने कमाऊ बेटे पर अपना हुकुम भी चलाती है। दूसरी तरफ विक्रम की माँ उच्चवर्गीय परिवार की स्त्रियां का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करतो है जो एक धर्म परायण महिला हैं। किंतु उसके साथ ही वह छुआछूत के कड़े बंधनों का पालन भी करती हैं। इसका स्पष्ट दर्शन उस समय होता है जब उनके घर में आया हुआ नौकर रतन उनके पैर छूना चाहता है तो वह पीछे हट जाती हैं और पहले रतन की जात पूछती हैं जब उनका पुत्र विक्रम यह बताता है कि रतन ब्राह्मण जाति का है तब वह उसके साथ अच्छा व्यवहार करने लगती हैं। इस प्रकार चंद्रकिरण जी ने एक साथ निम्न वर्गीय,मध्यवर्गीय और उच्च वर्गीय परिवार में माँ की विभिन्न भूमिकाओं का यथार्थ चित्रण

किया है। चंद्रकिरण जी के अगले उपन्यास चंदन चाँदनी में भी लक्ष्मी नामक एक ऐसी भारतीय नारी का चित्रण है जो जीवन भर अपने बच्चों की भलाई की चिंता के लिए परेशान रहती है। वह उपन्यास में आए पात्र गरिमा, प्रतिमा, नीलिमा और मनु की माँ है। लक्ष्मी ने एक साधारण भारतीय स्त्री की तरह अपने ससुराल के आरंभिक जीवन में विविध प्रकार के कष्ट को झेला है। एक–एक पैसे के लिए तंगी सहनी पड़ी है, सास के ताने, जेठानी की धौंस, घर के कामकाज की भी ऐसे न जाने कितनी समस्याएं उसके जीवन में आई हैं। इसी कारण लक्ष्मी जब अपनी बेटियों के ब्याह की बात आती है तो वह इन समस्याओं के प्रति अधिक चिंतित और परेशान रहती है। यही नहीं वह अपनी बड़ी लड़की गरिमा के थोड़ी साँवली होने पर अधिक चिंतित रहती है उसकी शादी के लिए लक्ष्मी के प्राण रात–दिन सोचते रहते थे वो लड़की तो एम.ए. भी हुई जा रही है। अपने छरहरे बदन और भोले मुखड़े के कारण चाहे उन्नीस से कम ही जचे पर मैं तो जानती हूँ कि गरिमा तेइसवें में चल रही है। भगवान अब क्या होगा। आज भी उनका हाथ तो ऐसा ही रहता है जैसा प्रतिमा की विदाई के अंतिम दिन।4।

वंचिता उपन्यास में जानकी का चित्र भी ममतामयी माँ के रूप में पाठकों के समक्ष आता है। जानकी एक अनाथ बच्ची है। 15 वर्षीय जानकी का विवाह 36 वर्ष के भगवान चंद्र से होता है। भगवान चंद्र के प्रथम पत्नी से दो बच्चे थे बिट्टू और प्रकाश। जब जानकी का ब्याह हुआ तब प्रकाश की उम्र 5 वर्ष और बिट्टू की ढाई वर्ष थी। उसने आते ही दोनों बच्चों को अपने सर आँखों पर उठाया। वह अनाथ होने का दुख बहुत अच्छे से जानती थी। इसी कारण उसने भगवान चंद के दोनों बच्चों से कभी सौतेला व्यवहार नहीं किया। पूरे मनोयोग से दोनों बच्चों का लालन–पालन किया। यही नहीं अपनी बेटी चंदा और तारा के खर्चों में कमी करके बिट्टू की शादी धूमधाम से करवाई। इस शादी में लिए कर्ज को उसने 4 वर्ष तक चुकाया। इसके बाद भी प्रकाश ने जब एम.ए. पास कर लिया और अचानक अपने से छोटी जात की एक पड़ोसी युवती से प्रेम कर बैठा तो उसके पिता ने यह संबंध नहीं स्वीकार किया। लेकिन जानकी ने प्रकाश की खुशी के लिए न केवल भगवान चंद्र को इस रिश्ते के लिए मनाया बल्कि अपने आधे गहने देकर और अपनी तरफ से अपने बिरादरी को दावत दे कर बहुत धूमधाम से बहू को घर में लाया। किंतु जब भगवान चंद्र की मृत्यु हो जाती है और प्रकाश एक विश्वविद्यालय में प्रोफेसर हो जाता है तब उसके व्यवहार में अप्रत्याशित बदलाव हो जाता है। वही जानकी अब उसे माँ नहीं नौकरानी की तरह प्रतीत होने लगती है। जिस जानकी ने कभी अपने सगे बेटे से भी अधिक प्रकाश को प्रेम किया वही प्रकाश इस समय कहता है कि प्रकाश समझते थे कि जाएगी कहाँ झगड़ा करके। हम पर रोब झाड़ना चाहती है। वह बोले अम्मा ज्यादा बकबक

मत करो जितना लिहाज करता हूँ। उतना ही सिर चढ़ती जा रही हो। रहना हो तो ऐसे ही रहना पड़ेगा वरना जहाँ मर्जी हो चली जाओ, इस उम्र में कौन पूछेगा तुम्हें।5 प्रकाश के इस अप्रत्याशित व्यवहार से जानकी को यह समझ में नहीं आता पृथ्वी घूम रही है यह हमारा सिर घूम रहा है। वह अतीत में खो जाती है और सोचने लगती है कि क्या यह वही प्रकाश है जिसके जीवन को बसाने के लिए हमने अपने सपनों की आहुति दे दी, पेट की रोटियों को काट दिया, अपने पति के ताने सहे और अपनी से छोटी जात की स्त्री को भी सहर्ष बहू के रूप में स्वीकार किया? उससे भी अधिक दुखद बात यह है कि जानकी जब अपने बच्चों चंदा, तारा, निशा और जगन को अपने देवर दयाचंद और बड़े बेटे प्रोफेसर प्रकाश के यहाँ रहने पर यह देखती है कि उन्हें भरपेट भोजन भी नहीं मिल पाता तो वह और दुखी होती है और अपने बच्चों के भविष्य के प्रति सोच–सोच कर वह अत्यंत दुखी होती है। वह सोचती है कि माना जानकी का सुहाग उजड़ गया, उसके अच्छे खाने पहनने के दिन समाप्त हो गए पर क्या विधवा हो जाने से उसके मन की सारो आशा–आकांक्षा भी मर गई है। वह अपने लड़कों को खूब पढ़ाना चाहती है जिससे वह भी प्रकाश की तरह सम्मान से रह सकें। वह लड़कियों को भी पढ़ा कर योग्य बनाना चाहती है जिससे वक्त– मुसीबत पर वह परकटे पक्षी की तरह न छटपटाए।6 यही नहीं जब प्रकाश अपने दोनों छोटी बहनों और भाई का आगे पढ़ाई का खर्च नहीं देना चाहता तो जानकी का मातृत्व जाग उठता है और वह अपने बच्चों को न कवल स्वाभिमान की शिक्षा देती है अपितु वह यह निर्णय भी करती है कि वह अपनी लड़कियों को आगे अवश्य पढाएगी। इस प्रकार इस उपन्यास में जानकी एक स्वाभिमानी, स्वावलंबी, मेहनती और आदर्श स्त्री के रूप में चित्रित की गई है। चंद्रकिरण जी स्वयं एक स्त्री और वात्सल्य मयी माता थीं। उन्होंने अपनी तीन लड़कियों– कल्पना, कामना और कुंतल तथा लड़के कार्तिकेय की शिक्षा–दीक्षा की तरफ खूब ध्यान दिया और अपने जीवन में अनेक अभावों को सहते हुए भी उन्हें यथायोग्य उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया। जीवन में स्वयं अनेक अभावों एवं कष्टों को झेल कर भी उन्होंने अपनी संतानों की उच्च शिक्षा में कभी बाधा नहीं प्रस्तुत होने दिया। उन्होंने अपनो आत्मकथा में लिखा भी है कि मेरी संताने अपने दश की स्थिति के अनुसार संपन्न हैं। अपनी शिक्षा स्वयं व सद्बुद्धि के कारण ही वह वहाँ पहुंचती हैं। माता–पिता का वृद्धा अवस्था में पूरा ध्यान रखते हैं। एक माँ को और क्या चाहिए।7 इस प्रकार अपने व्यक्तिगत जीवन में भी चंदकिरण जी एक अत्यंत सफल माँ की भूमिका का निर्वाह करती हैं और अपने जीवन के अभावों और संघर्षों की छाया अपने बच्चों के भविष्य पर नहीं पढ़ने देती।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि चंद्रकिरण जी एक यथार्थवादी कथाकार हैं जिन्होंने अपने भोगे हुए सच को ही अपनी रचनाओं मं व्यक्त किया है। उन्होंने अपने उपन्यासों में स्त्री जीवन के विविध रूपों का यथार्थ एवं सच्चा चित्र खींचा है। चंद्रकिरण जी ने समसामयिक स्थित से परे जाकर भी आधुनिक स्त्री के क्रांतिकारी रूप एवं स्वरूप को चित्रित किया है। महादेवी वर्मा जी ने भी अपने निबंध आधुनिक नारी में लिखा है कि भविष्य में भारतीय समाज की क्या रूपरेखा हो, उसमें नारी की कैसी स्थिति हो, उसके अधिकारों की क्या सीमा हो आदि समस्याओं का समाधान आज की जाग्रत और शिक्षित नारी पर निर्भर है। यदि वह अपनी दुरवस्था के कारणों को स्मरण रख सके और पुरुष की स्वार्थपरता को भी विस्मरण कर सके तो भावी समाज का स्वप्न सुंदर और सत्य हो सकता है। परंतु यदि वह अपने विरोध को ही चरम लक्ष्य मान ले और पुरुष से समझौते के प्रश्न को ही पराजय का पर्याय समझ ले तो जीवन की व्यवस्था अनिश्चित और विकास का क्रम शिथिल होता जाएगा।9 इसी प्रकार चंद्रकिरण सौनरेक्सा जी के उपन्यासों में एक ओर भारतीय परंपरा को आगे बढ़ाने वाली आदर्श माँ, आदर्श पत्नी, आदर्श भाभी, सहेली, प्रेमिका, बेटी आदि को प्रस्तुत किया है तो दूसरी ओर स्त्री जीवन को आधुनिक एवं क्रांतिकारी रूप में भी चित्रित किया गया है जो सामाजिक परिस्थितियों में स्वावलंबी एवं आत्म निर्णय लेने में सक्षम होती हैं। इसके साथ ही उन्होंने दीप्ति के रूप में परदुखकातर, निर्भय, मेहनती एवं कर्तव्यनिष्ठ बेटी को चित्रित किया है तो दूसरी और गरिमा के रूप में एक आदर्श बेटी को अंकित किया है। जिस समय लड़की को शिक्षा देना भी अपराध माना जाता था, उसी अवस्था में उसे नौकरी कराने वाली बहू, बेटी के रूप में प्रस्तुत कर लेखिका ने स्त्री जीवन के प्रति अपनी भविष्य की सोच और दूरदर्शी दृष्टि को ही प्रस्तुत किया है। आज स्त्री सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा रही है। चंद्रकिरण जी ने जहाँ एक तरफ स्त्री मुक्ति एवं संघर्ष का यथार्थ अंकन किया है वहीं पर कहीं पर भी पुरुषों को प्रतिपक्ष नहीं बनाया या पुरुषों के प्रति तिरस्कार की कोई भावना उनके साहित्य में नहीं दिखाई पड़ती। चंद्रकिरण जी स्वयं एक आदर्श बेटी, आदर्श पत्नी ,एक आदर्श माँ तथा एक यथार्थवादी स्त्री रचनाकार के रूप में हमारे सामने आती हैं।

1– हिंदी के आंचलिक उपन्यास शिल्प के बदले परिप्रेक्ष्य–डॉ. प्रेम भटनागर, पृष्ठ 20

2– आधुनिक हिंदी उपन्यासों में नारी के विविध रूपों का चित्रण– डॉ.मोहम्मद ढ़री वाला, पृष्ठ 32

3– और दिया जलता रहा–चंद्रकिरण सौनरेक्सा, पृष्ठ 16

4– चंदन चाँदनी– चंद्रकिरण सौनरेक्सा, पृष्ठ 23

5– चंदन चाँदनी– चंद्रकिरण सौनरेक्सा, पृष्ठ 69

6– वंचिता– चंद्रकिरण सौनरेक्सा, पृष्ठ 54

7– पिंजरे की मैना– चंद्रकिरण सौनरेक्साा, पृष्ठ 69

8– श्रृंखला की कड़ियां– महादेवी वर्मा, पृष्ठ 80